समूह से जुड़ कर ग्रामीण महिलाओं में बढ़ा आत्मविश्वास

गांव की ग्रामीण महिलाएं आज स्वावलंबी बन रही हैं. इन्हें स्वावलंबी बनाने में जेएसएलपीएस भरपूर सहयोग कर रही है. प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को बेहतर करने के लिए प्रेरित किया जाता है. कई दीदियां कृषि मित्र बन कर खेती-किसानी के गुर सीखा रही हैं. अब ग्रामीण महिलाएं सिर्फ घर का चौका-बर्तन ही नहीं करतीं बल्कि गांव-समाज के विकास में भी अपनी भूमिका निभा रही हैं. ग्रामीण महिलाओं ने कहा कि सखी मंडल के कारण ही वह आज इस मुकाम पर हैं. आज कई महिलाएं बिना हिचकिचाहट के अपना काम बखूबी कर रही हैं.

सखी मंडल से नंदी दीदी को मिला सहारा

अपनी किराना दुकान में समूह की सदस्य नंदी धनवार.

आशा तिग्गा

प्रखंड मनोहरपुर
जिला प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड का एक गांव है तिरला. इस गांव की नंदी धनवार ने जीवन रोशन स्वयं सहायता समूह से जुड़ कर अपनी एक अलग पहचान बनायी हैं. चार साल पहले नंदी दीदी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. आमदनी का कोई जरिया नहीं होने के कारण पति को बाहर जाकर काम करना पड़ता था. इसी बीच नंदी ने जीवन रोशन स्वयं सहायता से जुड़ीं. मैट्रिक पास नंदी को समूह में बुककीपर का काम मिला. समूह के हिसाब-किताब का बखूबी कार्य करने के कारण ग्राम संगठन में लेखापालक का जल्द कार्य मिल गया. इस काम में नंदी को पांच सौ रुपये मानदेय के तौर पर मिलने लगा. कार्य के प्रति समर्पित नंदी को संकुल संगठन में कार्य करने की जिम्मेदारी मिली. इसके लिए बकायदा तीन हजार रुपये महीना मानदेय मिलने लगा. इस बीच घर की माली हालत सुधारने के लिए नंदी धनवार ने अपने समूह से दो हजार रुपये का ऋण लिया. कुछ दिन बाद एक बार फिर समूह से 10 हजार रुपये का ऋण लिया. इस राशि से उन्होंने सूकर पालन शुरू किया. धीरे-धीरे ससमय ऋण की वापसी भी की. अब एसवीइपी के माध्यम से एक लाख रुपये का ऋण लेकर वह एक किराना दुकान खोलीं, ताकि उनके पति को काम के लिए बाहर न जाना पड़े. क्षेत्र में किराना दुकान खुलने से गांव के अन्य लोगों को काफी सहूलियत होने लगी. धीरे-धीरे दुकान चल पड़ी और अच्छी आमदनी भी होने लगी. नंदी के परिवार की धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी. बच्चे भी अच्छे स्कूल में पढ़ने लगे. गरीबी से बाहर निकालने में जेएसएलपीएस का वह शुक्रिया अदा करती हैं. नंदी कहती हैं कि पहले मेरी कोई पहचान नहीं थी, लेकिन जब समूह से जुड़ कर गतिविधियों में सक्रिय रहने लगीं, तो धीरे-धीरे समूह से उन्हें अलग पहचान मिलने लगी. कहती हैं कि पहले मैं घर संभालती थी, आज घर के साथ-साथ संकुल संगठन के कार्यालय में भी सेवा दे रही हैं. नंदी की इच्छा है कि गांव में जल्द ही एक फोटो कॉपी की दुकान खोलें, ताकि ग्रामीणों को इसके लिए गांव से बाहर नहीं जाना पड़े.

ग्राम संगठन कर रहा गरीबों का सहयोग

अमिता देवी

प्रखंड रनिया
जिला खूंटी

खूंटी जिले के रनिया प्रखंड अंतर्गत किशुनपुर गांव में सात दिवसीय वीआरपी ड्राइव कार्यक्रम आयोजित हुआ. इस सात दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन दीदियों ने गांव का भ्रमण किया. दूसरे दिन गांव में मौजूद घर, स्कूल, चबूतरा, आंगनबाड़ी केंद्र, चापाकल, पेड़ आदि को तस्वीर के माध्यम से बताया गया. तीसरे दिन आमसभा का आयोजन हुआ. चौथे दिन ग्राम संगठन की दीदियों की बैठक हुई, जिसमें कई पहलुओं पर चर्चा की गयी. पांचवें व छठे दिन संस्थागत फॉर्म भरा गया, जिसमें स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत सचिवालय से रिपोर्ट ली गयी. सातवें दिन जरूरतमंदों के बीच अनुदान राशि वितरित की गयी. इसके तहत अत्यंत पिछड़ा वर्ग के मोहित, पिंकी, दिगंबर, बसंती देवी, रामचंद्र को 1500-1500 रुपये दिये गये, वहीं अनुसूचित जाति की फगुवा तुरी व सिसलिया को 2250-2250 रुपये अनुदान राशि दी गयी. इस संबंध में वीआरपी बबीता देवी ने कहा कि ग्राम संगठन की दीदियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक लाख रुपये की राशि आयी है, जिसे लाभुकों के बीच वितरित किया गया. साथ ही इसके उपयोग के बारे में भी कार्यक्रम में बताया गया. इस अवसर पर दीदियों ने कहा कि जब से गांव में समूह का गठन हुआ है, उसके बाद से गांव व ग्रामीणों की स्थिति में काफी बदलाव आने लगा है. गांव की कई समस्याओं का हल हुआ है. सात दिवसीय कार्यक्रम में ग्राम प्रधान जयमानसिंह डहंगा, वार्ड सदस्य डोमनिक डहंगा, ग्राम संगठन अध्यक्ष एमंती डहंगा, रनिया कलस्टर के सीसी दिनेश कुमार मुंडा, ग्राम संगठन कोषाध्यक्ष, कौशल्या देवी, पूनम देवी समेत काफी संख्या में स्थानीय लोगों ने हिस्सा लिया.

वीआरपी ड्राइव कार्यक्रम में दीदियों को दी गयी अनुदान राशि.

आधुनिक खेती से धान की बढ़ाएं उपज

सुषमा देवी

प्रखंड कांके
जिला रांची

खरीफ फसल में धान मुख्य है. राज्य में धान की खेती अब भी परंपरागत तरीके से ही होती है, हालांकि अब धीरे-धीरे आधुनिक खेती की ओर किसानों की रुचि बढ़ रही है. किसानों को आधुनिक तरीके से खेती करने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है. इससे जहां फसलों की उत्पादकता बढ़ेगी, वहीं किसानों की आमदनी भी अच्छी होगी. वर्तमान में धान के उत्तम बीज आइआर 64, जया, तारातरी, बासमती, एराइज, पूसा बासमती, माही सुगंधा, रतना, पाइनियर, धान्या, विकास आदि है. इन धान के बीजों को किसान बिचड़ा तैयार कर 21 दिन के अंदर रोपाई कर दें. रोपाई से पहले खेतों की जुताई ट्रैक्टर से चार-पांच बार कर लें. खेतों में वर्मी कम्पोस्ट का भरपूर उपयोग करें. इससे पैदावार में बढ़ोतरी होगी. बीजों का बीजोपचार करना भी जरूरी है, ताकि कम लागत में फसल निरोग रहे. श्रीविधि से खेती करने से उत्पादन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है. मिट्टी का कटाव रोकने के लिए सीढ़ीनुमा खेत बनाना चाहिए. साथ ही वृक्षारोपण से भी मिट्टी कटाव को रोका जा सकता है. सिंचाई के लिए वर्षा जल को संजोना जरूरी है. इससे पानी की बर्बादी नहीं होगी, वहीं आवश्यकतानुसार खेतों को पानी भी उपलब्ध हो सकेगा. खेती-किसानी से जुड़े लोगों के लिए कई सरकारी योजनाएं हैं. किसान क्रेडिट कार्ड, केवाइसी, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आदि है. कृषि यंत्र भी किसानों को खेती-किसानी में काफी सहयोग देता है. वर्तमान में जेएसएलपीएस के माध्यम से किसानों को उत्तम बीज, खाद, जुताई के लिए ट्रैक्टर, ड्रील मशीन, धान झाड़नेवाली मशीन आदि दी जा रही है. इन कृषि यंत्रों का उपयोग कर ग्राम संगठन की महिलाएं धान उत्पादन में वृद्धि कर रही हैं.

पर्यावरण के प्रति जागरूक होतीं समूह की दीदियां

पंचायत सचिवालय परिसर में वृक्षारोपण करतीं सखी मंडल की दीदियां व अन्य सदस्य.

दुलारी हेंब्रम

प्रखंड मसनिया
जिला दुमका

दुमका जिला अंतर्गत मसनिया प्रखंड के मसानजोर पंचायत सचिवालय में संकुल संगठन की बैठक आयोजित हुई. इस बैठक में चार पंचायत की सखी मंडल की दीदियां शामिल हुईं. इस अवसर पर सखी मंडल की दीदियों ने पंचायत सचिवालय परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण को संरक्षित करने का संकल्प लिया. मौके पर मौजूद सीसी शमीम अख्तर ने पर्यावरण की रक्षा, अपने आसपास पेड़-पौधे लगाने, उसका सही उपयोग करने व उससे मिलने वाले लाभ के बारे में दीदियों को बताया. उन्होंने उपस्थित सभी दीदियों से पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे बढ़ने व हर साल पेड़ लगाने का आह्वान भी किया. बीएपी इरशाद अंसारी ने एक नये प्रोजेक्ट पीआरआई सीबीओ के बारे में दीदियों को बताया. इसके तहत पंचायती राज व्यवस्था को समुदाय के साथ जोड़ने और दीदियों को सरकारी लाभ कैसे मिले, इस पर विशेष जोर दिया गया. साथ ही ग्रामसभा की उपयोगिता के बारे में भी बताया गया. ग्राम स्वराज अभियान के दूसरे चरण में इस कलस्टर के तीन गांव खुटोजोरी, बड़ा डुमरिया व धवाड़गाल का चयन हुआ है, जहां से इसकी शुरुआत होगी. इसमें लाभुकों को जन-धन योजना, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना आदि से हर परिवार को जोड़ कर इसका लाभ दिलाने का प्रयास होगा. बैठक में दीदियों ने अपनी आजीविका बढ़ाने के लिए स्वरोजगार जैसे- खेती-बारी, पशुपालन आदि के बारे में चर्चा की. साथ ही आत्मनिर्भर बनती दीदियों ने इसके लिए जेएसएलपीएस का शुक्रिया अदा किया. सखी मंडल की दीदियों ने कहा कि अगर आज आजीविका नहीं होता, तो वो आज इस मुकाम तक नहीं पहुंच पाती. जेएसएलपीएस ने समूह से जोड़ने के साथ-साथ उनमें कुछ कर गुजरने के लिए हौसला बढ़ाया. स्वरोजगार अपनाने को भी प्रेरित किया. संकुल संगठन की इस बैठक में मेरी मुर्मू, डीइओ दीपक कुमार, अध्यक्ष आशा देवी, सचिव कविता देवी, रेखा मुर्मू, मीना, पिंकी, संतोष, रामलाल, वीणापानी समेत काफी संख्या में दीदियां शामिल हुईं.

खेती उगा कर बदली जिंदगी

नेहा कुमारी

प्रखंड बरवाडीह
जिला लातेहार

लातेहार जिला अंतर्गत बरवाडीह प्रखंड के छेंदा गांव की रहनेवाली रीना देवी अपनी हिम्मत व हौसले से खुद व अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाल चुकी हैं. अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने का सारा श्रेय वह अपने समूह को देती हैं. रीना मानती हैं कि समूह गरीब परिवारवालों के लिए जीने का एक सहारा है. रीना साल 2015 से पहले जैसे-तैसे अपने परिवार का भरण-पोषण करती थीं. इसी बीच साल 2015 में रीना संतोषी स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. समूह से जुड़ कर उन्हें काफी जानकारी मिली. किसान मित्र से खेती-किसानी के गुर सीखीं. अपनी थोड़ी-सी जमीन पर समूह से 10 हजार रुपये ऋण लेकर सब्जी की खेती शुरू कीं. लौकी, टमाटर, करैला, ककड़ी आदि लगायीं. कृषक मित्र द्वारा बतायी गयी विधि के अनुसार खेती करने से छोटे जमीन पर भी एक क्विंटल लौकी, 10 क्विंटल टमाटर, 30 किलोग्राम करैला का पैदावार हुआ. इससे अच्छी आमदनी भी हुई. अच्छी आमदनी होने से जहां समूह से लिए ऋण को चुकता कर दीं, वहीं घर-परिवार चलाने में भी काफी सहूलियत हुई. रीना अब अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर रही हैं. रीना कहती हैं कि आज जो भी उनके पास है, वह समूह की ही देन है.

गरीबों की मिसाल मालती

वीणा देवी

प्रखंड मनोहरपुर
जिला प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड की ढीपा पंचायत की रहनेवाली हैं मालती सरदार. पैसे के अभाव में अपने पति को खोनेवाली मालती आज आत्मनिर्भर हैं. साल 2016 में मां मनसा स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं मालती आज अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं. मालती कहती हैं कि आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब होने के कारण दो वक्त की रोटी मुनासिब नहीं थी. पति बीमार पड़े, तो इलाज के लिए पैसा नहीं था. पैसे व इलाज के अभाव में पति ने दम तोड़ दिया. बच्चे की जिम्मेदारी कंधे पर आ गयी. समूह से जुड़ने के बाद मालती ने घर में राशन खरीदने के लिए दो सौ रुपये समूह से ऋण लिया. फिर कुछ और ऋण लिया और उस राशि से उन्होंने खेती-बारी शुरू की. साथ ही खेत के पास ऊबड़-खाबड़ हिस्सों की मिट्टी से ईंट बनाना शुरू किया. खुद से बनायी ईंट को बेचने से उनकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होने लगा. बच्चों को स्कूल में पढ़ाने पर भी ध्यान देने लगीं. इस तरह मालती की आजीविका पटरी पर आ गयी. समूह से ऋण लेकर छोटी-छोटी जरूरतों को भी पूरा करने लगीं और उस ऋण की ससमय वापसी भी करने लगीं. मालती कहती हैं कि समूह ने उन्हें खुद के पैरों पर खड़ा होने का हौसला दिया, जिसे कभी भूलाया नहीं जा सकता है.

जैविक खेती की ट्रेनिंग मिली

मुनिया देवी

प्रखंड डुमरी
जिला गिरिडीह

गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड की टेगराखुर्द पंचायत सचिवालय में एक दिवसीय जैविक खेती संबंधी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ. इस शिविर में जैविक खेती के लिए गोबर खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया. इसमें डुमरी प्रखंड के छह गांवों से सखी मंडल की एक-एक दीदियों ने भाग लिया. आंध्र प्रदेश से आये दो कृषि मित्र ने सखी मंडल की दीदियों को जैविक खेती के गुर सिखाये. इस दौरान बताया गया कि नयी तकनीक से जैविक खाद बना कर खेती करने से फसल की पैदावार पहले की अपेक्षा ज्यादा होती है. इसके अलावा खेती-किसानी से जुड़ी कई बातों को बताया गया. धान की खेती के अलावा गेहूं, दाल, सब्जियों की खेती पर अधिक जोर दिया गया. प्रशिक्षण प्राप्त कर दीदियां अपने-अपने खेतों में जैविक खाद को प्राथमिकता देने लगीं. इस संबंध में कई दीदियों ने कहा कि पहले फसलों का उत्पादन औसत रहता था, लेकिन जब से जैविक खाद का इस्तेमाल किया गया, तब से फसल का उत्पादन दोगुना हो गया. बेहतर खेती होने के कारण आसपास के किसान भी अब अपने खेतों में जैविक खाद का उपयोग करने लगे हैं. धुतवाली गांव की सखी मंडल की सदस्य गीता कहती हैं कि पहले समूह से जुड़ीं. फिर कृषि मित्र का और अब खाद बनाने का प्रशिक्षण मिला. जैविक खेती का प्रशिक्षण काफी लाभदायक रहा. इससे न केवल खेतों की उर्वरता बरकरार रहेगी, बल्कि फसलों का उत्पादन भी अधिक होगा और खेती-किसानी से जुड़े लोगों को भी अच्छी आमदनी प्राप्त होगी. दीदियों ने ऐसे प्रशिक्षण के लिए जेएसएलपीएस को बधाई दी है.

समूह का जैविक खेती पर जोर

नयनतारा कुमारी

प्रखंड लेस्लीगंज
जिला पलामू

फसलों के लिए अमृत समान है जैविक खाद. घर के अपशिष्ट पदार्थ, कूड़ा, गोबर आदि का उपयोग जैविक खाद के रूप में करके खेतों की उर्वरता बरकरार रखने और फसलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, हालांकि आज भी कई ऐसे किसान हैं, जो रासायनिक खाद का ही उपयोग करते हैं. इससे न सिर्फ खेतों की उर्वरता पर असर पड़ता है, बल्कि खेतों में कई बीमारियां भी साथ लाती है. इसी की रोकथाम के लिए जेएसएलपीएस ने कई इलाकों में कृषक मित्र का चयन किया. इन कृषक मित्र का उद्देश्य जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीणों को जागरूक करना है. जैविक खाद के तहत धनजीवामृत खाद को सबसे बेहतर खाद माना गया है. इसके फायदे भी बहुत हैं. इसके बनाने के तरीके भी आसान हैं. एक एकड़ क्षेत्र के लिए आपको आधा-आधा किलोग्राम बेसन व गुड़, 10 किलोग्राम गोबर तथा एक लीटर गौमूत्र की जरूरत होती है. सबसे पहले गुड़ को चूर्ण कर दें. उसके बाद गुड़ और बेसन को गोबर में मिला दें और फिर आवश्यकतानुसार गौमूत्र डालें. इसके बाद छायादार साफ जगह पर गोबर का गोला बना कर उपले की तरह सूखने के लिए छोड़ दें. करीब एक सप्ताह सुखाने के बाद उसे कूट कर चूर्ण बना लें. इस चूर्ण को एक सौ किलोग्राम सूखे गोबर में मिला कर इसे खाद के रूप में उपयोग कर सकते हैं.